# जय महाकाल

# नाम जप का महत्व

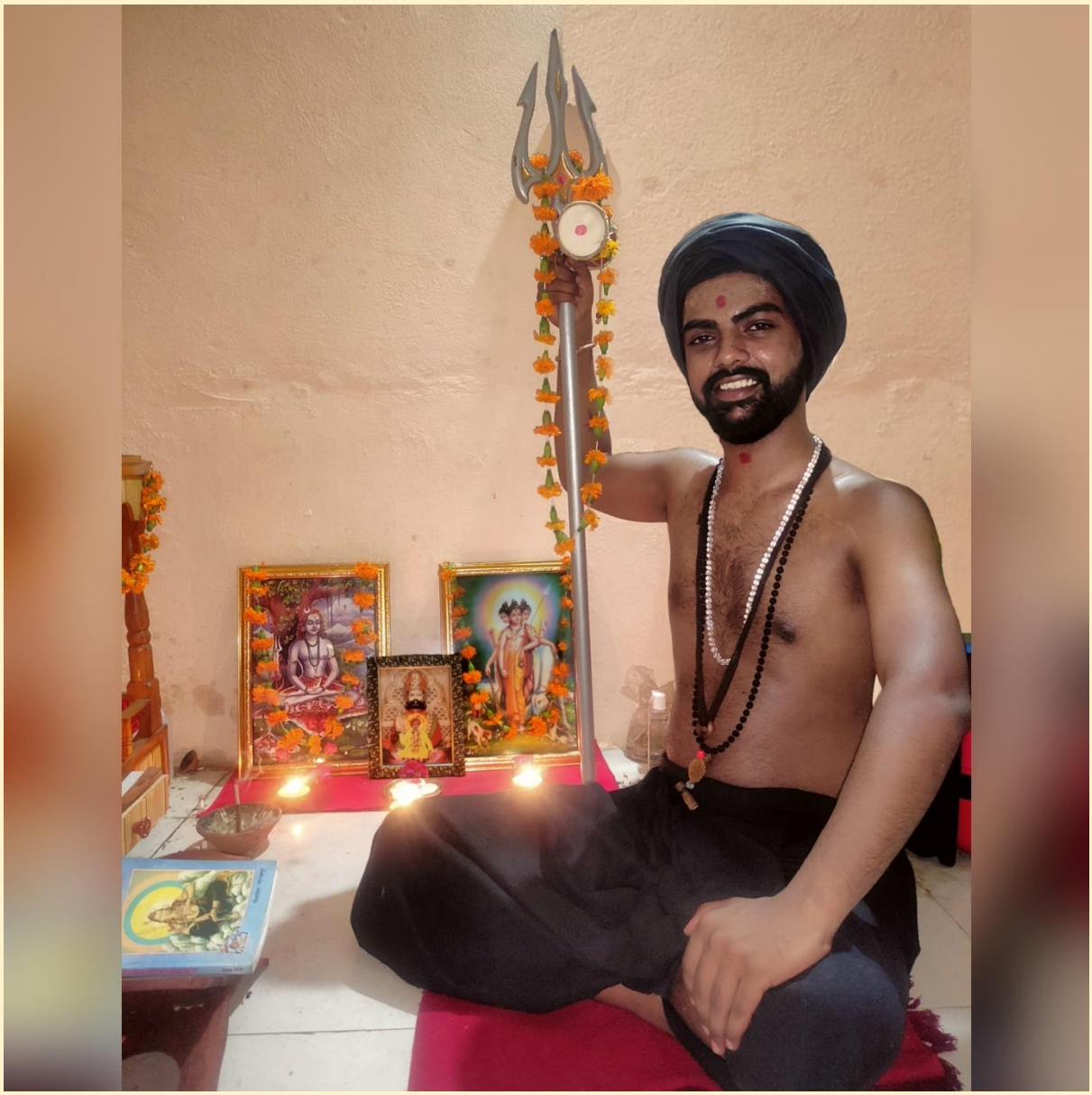

**जय महाकाल**

**आदेश सिद्धो आदेश**

सभी सनातनी ग्रंथों में भगवान के दो रूप माने गए हैं - एक सगुण और दूसरा निर्गुण। वास्तव में दोनों रूप परस्पर अभिन्न हैं। निर्गुण ब्रह्म में निष्क्रियता होने से गुण का होना संभव नहीं हैए तथापि वही माया में प्रविष्ट होकर भक्तों के संरक्षणए धर्म स्थापनाए जप-पूजा आदि के उद्देश्यों के लिए निर्गुण से सगुण रूप धारण कर लेते हैं ।

स्वरूप विभिन्नता के आधार पर उपासना में भी विभिन्नता होती है। एक तरफ निर्गुण उपासना होती है और दूसरी ओर सगुण उपासना होती है। निर्गुण उपासना वास्तव में बहुत कठिन होती है। जब तक व्यक्ति परमात्मा के निर्गुण स्वरूप को सही ढंग से नहीं समझ लेताए तब तक सगुण उपासना को छोड़कर और कोई विकल्प नहीं होता। शिवपुराण वायुसंहिता में सगुण उपासना के आठ विभिन्न प्रकार बताए गए हैंए जो है - भक्तोंमें प्रीतिए पूजाका अनुमोदनए स्वयं अर्चा करनाए प्रभुके निमित्त अङ्गोंकी चेष्टा करनाए कथा-श्रवण में भक्तिए स्वरए नेत्र और अङ्गको विक्रियाए भगवान्का नित्य स्मरण और उनका ही आश्रय । इन प्रकार के चिह्नों मेंए चाहे व्यक्ति को जिस जाति का होने के बावजूदए वो सर्वश्रेष्ठ है ।

इन सगुण उपासना के अंगों में कलयुग् में सर्वश्रेष्ठ साधना कही गयी है नाम सुमरन करना । वैसे तो अलग अलग देवों की उपासना करने वाले साधन अपने अपने इष्ट के नामो का जाप करते है । परंतु सभी का उल्लेख यहां संभव नही होगा इसलिए कुछ मुख्य देवो के नाम जप के ऊपर प्रकाश डालेंगे ।

## शिवनाम की महिमा -

**शिव इत्यस्ति यन्त्राम तद्धि नामोत्तमोत्तमम् ।**
**तदेव परमं ब्रह्म तदेव हि वरानने ॥**
**शिवनामस्वरूपेण व्यक्तं ब्रह्माहमेव हि।**
**शिवनामाहमेवेति विजानीहि यथार्थतः ॥**
**यदव्यक्तं परं ब्रह्म वेदान्तप्रतिपादितम् ।**
**तदेवेदं विजानीहि शिव इत्यक्षरद्वयम् ॥**
**तारकं ब्रह्म परमं शिव इत्यक्षरद्वयम् ।**
**नैतस्मादपरं किंचित् तारकं ग्रहा सर्वथा ॥**

परमेश्वर शिव स्वयं कहते है - "हे वरानने! मेरा श्शिवश यह नाम उत्तमोत्तम हैए वही परब्रह्म है। श्शिवश यह नाम मेरे ब्रह्मरूप की प्रतिष्ठा है। शिव नाम से यथार्थ में मुझे ही समझो। जो वेदान्त से प्रतिपादित अव्यक्त परब्रह्म हैए द्वयक्षर श्शिवश भी वही है। इन दो अक्षरों का श्शिवश नाम परब्रह्म स्वरूप और तारक हैए और इससे भिन्न कोई तारक नहीं है।

## शिव नाम की महिमा इस प्रकार बतायी गयी है -

**ते धन्यास्ते महात्मानः कृतकृत्यास्त एव हि ।**
**द्वयक्षरं नाम येषां वे जिये संस्थितं सदा ॥**
**शिव इत्यक्षर नाम चैरुदीरितमद्य वै।**
**ते वै मनुष्यरूपेण रुद्राः स्युनीन्न संशयः ॥**

श्जिनकी जिह्वाके अग्रभागपर सदा भगवान् शंकर का दो अक्षरोंवाला नाम (शिव) विराजमान रहता हैए वे धन्य हैंए वे महात्मा पुरुष हैं तथा वे ही कृतकृत्य हैं। आज भी जिन्होंने श्शिवश इस अविनाशी नामका उच्चारण किया हैए वे निश्चय ही मनुष्य रूप में रुद्र हैं - इसमें संशय नहीं है ।"

## शक्ति और शक्तिमान -

भगवान मायापति हैंए इसलिए उनके नाम के साथ उनकी माया का भी नाम होना आवश्यक है। शक्ति और शक्तिमान में कोई भिन्नता नहीं है और वह कभी भी अलग नहीं हो सकती है। इन दोनों के नामों को एक साथ मिलाकर उच्चारण करने की प्रथा प्रायः सभी सम्प्रदायों में देखी जाती है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के कृष्णजन्म खण्ड में नारायण ने नारद से कहा है कि प्रकृति जगत की माता है और पुरुष जगत के पिता हैं। इसलिए श्हे लक्ष्मीनारायणश्ए श्हे गौरीशंकरश जैसे प्रयोग शाश्त्रो में मिलते हैं। श्हे नारायणलक्ष्मीश्ए श्हे ईशगौरीश यह कोई नहीं कहता। जो पहले पुरुष के नाम का उच्चारण करके पश्चात् प्रकृति के नाम का उच्चारण करता हैए वह मनुष्य वेदवाक्य का उल्लंघन करने वाला मातृद्वेषी होता है। जो आदि में श्प्रकृतिश का नाम लेकर पश्चात् श्पुरूषश का नाम लेता हैए वही भक्त ईश्वर को प्राप्त होता है और करता है ।

## नाम जप के लिए निर्देश -

भगवानूका नाम चलते-फिरतेए दिन-रातए उठते- बैठतेए जैसे हो वैसे ही जपना चाहियेए इसमें कोई बाधा नहीं है। नाम-जपमें किसी नियम-संयमकी आवश्यकता नहीं है और देश-कालका भी विचार नहीं है-

**अशुचिव शुचिर्वापि सर्वकालेषु सर्वदा ।**
**नामसंस्मरणादेव संसारान्मुच्यते क्षणात् ॥**

जो मनुष्य पवित्रता या अपवित्रता का विचार नहीं करताए सदा-सर्वदा नाम-स्मरण में रत रहता हैए वह बहुत शीघ्र संसार के आवागमन से मुक्त हो जाता है। भगवान शिव के नाम-स्मरण में न देश का नियम हैए न काल का। मनुष्य केवल शिव नाम की कीर्तन से मुक्त हो जाता है। यज्ञ मेंए दान मेंए खाने में और उपासना में भी काल का विचार हैए लेकिन शिव के कीर्तन में काल का विधान बिल्कुल नहीं है। घूमते हुएए बैठते हुएए सोते हुएए पीते हुएए खाते हुए और जपते हुए श्शिवश नाम की संकीर्तन से मनुष्य पाप से मुक्त हो जाता है। बैठे हुएए सोते हुएए खाते हुएए खेलते हुएए चलते-फिरते सदा शिव का ही श्चिन्तन करते रहना चाहिए। अरे मूढमतियो! यम का भैंसा नित्य बीते हुए कल से निकट ही दिखाई देता हैए इसलिए शिव का स्मरण करो ए शिव का ही ध्यान करो और शिव का ही सर्वकाल में स्मरण करो चलते-फिरतेए सोते-जागतेए उठते-बैठते और आँख खोले हुए और मूंदे हुएए पवित्रता में या अपवित्रता में सर्वत्र शिव का ही चिन्तन करना चाहिए।

नाम जप करने की विधि की बात करे तो नाम और रूप दोनों को मिलाकर जप करना चाहियेए अर्थात् नामके साथ नामके स्वरूपका ध्यान करना चाहिये और उसमें अपनेको तन्मय कर देना चाहिये ।

जब आप शिव नाम का जप करे तो शिव के स्वरूप का भी ध्यान करें ।

कैलाश की बर्फीली चोटी पर अपनी शक्ति पार्वती के साथ जटाजूट शिव विराजमान है जिनकी जटाओं से गंगा बहती है ए जिनके शिष्य पर चंद्र चमक रहा है ए जिनके तीन नेत्र है ए सर्व अंगों पर भस्म के त्रिपुंड बने है ए गले मे नाग का हार और रुद्राक्ष की कंठमाला सुशोभित है ए जो बाघम्बर धारण किये हुए है शांत चित्त से मंद मंद मुस्कुरा रहे है जिनके वाम अंग में पार्वती देवी बैठी है ।

शिव नाम के अतिरिक्त भी साधक अपने अपने इष्ट के नाम का जप कर सकते है जैसे राम ए कृष्ण ए नृसिंह ए विष्णु ए दुर्गा काली आदि। चाहे दीक्षित हो या नही हो सब नाम जप के अधिकारी होते है ।

सभी नामो में द्विआक्षरी नामो का महत्व अधिक कहा गया है जैसे हर ए हरि ए शिव ए राम ए दुर्गा ए काली आदि ।

## राम नाम जप की महत्वता -

एक दिन पार्वतीजीने महादेवजीसे पूछा- आप हर दम क्या जपते रहते हैं छ

उत्तर में महादेव ने विष्णुसहस्रनाम कहा ।

अन्तमें पार्वती जी ने कहा- श्ये तो एक हजार नाम आपने कहे। इतना जपना तो सामान्य मनुष्यके लिये असम्भव होगा । कोई एक नाम कहिये जो सहस्रों नामोंके बराबर हो और उनके स्थानमें जपा जाय।श इसपर महादेवजीने कहा-

**रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे । सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥**
**राम राम शुभ नाम रटिए सबखन आनँद-धाम। सहस नामके तुल्य हैए राम-नाम शुभ नाम ॥**

पुनः शिवजी श्रीरामजीसे कहते हैं- राम

**मुमूर्षोर्मणिकर्ण्या अर्धोदकनिवासिनः । अहं ददामि ते मन्त्रं तारकं ब्रह्मदायकम् ॥**

अर्थात् मरनेके समय मणिकर्णिका-घाटपर गङ्गाजीमें जिस मनुष्यका शरीर गङ्गाजलमें पड़ा रहता है उसको मैं आपका तारक-मन्त्र देता हूँए जिससे वह ब्रह्ममें लीन हो जाता है ।

## दुर्गा नाम जप की महत्वता -

**न दुर्गा नाम सदृशं नामास्ति जगतीतले ।**
**तस्मात् सर्वप्रयत्नेन स्मर्तव्यं साधकोत्तमैः ।**
**यस्य स्मरणमात्रेण पलायन्ते महापदः ॥**

दुर्गा नाम के सदृश इस संसार में अन्य कोई नाम नहीं है। इसलिए प्रयत्नपूर्वक साधकों को यह नाम जपना चाहिए। इसके स्मरणमात्र से सभी आपत्तियाँ भाग जाती हैं। इस कलिकाल में नाम-जप का बड़ा माहात्य है। अन्य साधन कठिनए सर्वसामान्य के लिए कष्टसाध्य हैं। उनमें नियम आदि की कठिनता होने से सिद्धि सुलभ नहीं है। किन्तु यह दुर्गा नाम सर्वथा सुलभ और महान् फल देने वाला हैए इसलिए इसका स्मरण सर्वदा करना चाहिए ।

एक अन्य प्रसंग अनुसार काशीक्षेत्र में जीवों के मरने पर भगवान शंकर इस धार्मिक नाम का उपदेश देकर मुक्ति प्रदान करते हैं। इस बात का प्रमाण श्महाभागवतश में नारद-शंकर के बीच वार्तालाप में प्राप्त होता है। इससे दुर्गा नाम की महत्ता सार्थक रूप से समझी जा सकती है ।

प्रतिदिन पवित्र मन से भक्ति भाव से 108 बार (1 माला) जपने वाला व्यक्ति धनी और चिरंजीवी बनता है। 1008 बार (10 माला) प्रतिदिन जो जपता हैए वह धनार्थी धन प्राप्त करता है और ज्ञानार्थी ज्ञान प्राप्त करता है। वह पुत्रवान् बनता है और रोग से मुक्त होता हैए बंधनो से छूट जाता हैए भयभीत प्राणी भय से मुक्त होता हैए और पापी प्राणी पाप से मुक्त होता है। जो व्यक्ति प्रतिदिन 10ए000 बार (100 माला) जपता हैए वह दूसरों को आशीर्वाद या श्राप देने में समर्थ हो जाता है । प्रत्येक महीने में जो व्यक्ति लगभग 41 माला प्रतिदिन जपता हैए उसे ग्रहों की पीड़ा नहीं होतीए न ही उसका धन नष्ट होता हैए और वह सर्प का भय नहीं महसूस करता है। उसे जलए अग्निए चोरीए जंगल में सिंह और व्याघ्रए भूत-प्रेतए पिशाचए शत्रु और दुष्ट लोगों का भय नहीं होता है। वह जपक स्वर्ग में सुख भोगता है ।

इन प्रमाणों के अनुसार कहा जाता है कि नाम जप एक सुलभ और उत्तम फलदाई साधना है । विशेषकर अदीक्षित लोगो के लिए यह साधना वरदान स्वरूप है । ग्रहण काल मे ए पर्वकाल में ए सिद्धयोग में नाम जप अधिक फलदाई होता है ।

**शुभमस्तु**

लेख - अमोघ नाथ ।
व्हाट्सप्प - +91-7649064116

फेसबुक पेज - https://www.facebook.com/amogh.tantram

व्हाट्सएप्प चैनल - https://whatsapp.com/channel/0029Va5DMSHBPzjTD54sEw1u

फेसबुक प्रोफाइल - https://www.facebook.com/Amogh.Aghora